Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2021, VOL- 8/65
https://doi.org/10.21922/srjis.v8i65.1341

विद्यालयों में कोल जनजातीय बच्चों के अवधारण की चुनौतियाँ

प्रिन्स कुमार[1] & प्रो० शिरीष पाल सिंह[2]

[1]शोधार्थी (पी-एच.डी.शिक्षाशास्त्र, शिक्षा विभाग), महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र -442001, Email- anshprincekumar27@gmail.com

[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र -442001

Email- shireeshsingh1982@gmail.com

Paper Received On: 21 JUNE 2021

Peer Reviewed On: 30 JUNE 2021

Published On: 1 JULY 2021

Abstract

प्रस्तुत शोध-पत्र "विद्यालयों में कोल जनजातीय बच्चों के अवधारण की चुनौतियाँ" से सम्बन्धित है । अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कोल जनजाति के छात्रों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना है । जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश प्रयागराज (इलाहबाद) जिले के शंकरगढ़ ब्लाक में स्थित विद्यालयों में कक्षा प्रथम से कक्षा अष्टम में अध्ययनरत कोल जनजाति के समस्त छात्रों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया । न्यादर्श के रूप में शोध की वर्णनात्मक प्रकृति के अनुरूप उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया जिसमें कुल 100 छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया । शोध-उपकरण के रूप में शैक्षिक स्थिति को ज्ञात करने के लिए शोधार्थी द्वारा स्व:निर्मित उपकरण प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया । निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया वर्तमान शिक्षा पद्धति में शिक्षण एवं पाठ्यक्रम का प्रारूप कुछ इस प्रकार से निर्धारित किया गया है कि आप जनमानस के लिए प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य ही स्पष्ट नहीं हो पाते हैं । प्रचलित शिक्षा जन-मानस के दैनिक-जीवन में अनुपयोगी प्रतीत होती है । अधिकतर विद्यार्थी शैक्षिक समस्याओं का कारण विद्यालय जाने का कोई साधन न होना तथा घर से विद्यालय का दूर होना मानते हैं । कोल जनजाति के लोगों को शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच थी क्योंकि उनको लगता था कि उनके बच्चे पढ़-लिख कर भी एक अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकते । कोल जनजाति के अधिकांश लोग अशिक्षित थे जिसके कारण वे शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते थे । कोल जनजाति के लोग दिन भर की मजदूरी से अपने बच्चों का पेट भरते हैं । उन विद्यार्थियों का कहना था कि कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाई जाने वाली शिक्षा अच्छे से समझ में नहीं आती है । शिक्षक द्वारा ब्लैकबोर्ड होने के बाद भी बोलकर पढ़ाना समझ से बाहर चला जाता है । कक्षा के दौरान सहायक-सामग्री का भी अभाव है जिसके कारण शिक्षण के दौरान बाधा उत्पन्न होती है । विद्यालय में देरी से पहुँचने पर शिक्षक द्वारा उन्हें दंडित किया जाता है । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि उनके विद्यालय में पानी पीने के लिए हैण्डपम्प तथा वाटरकूलर की सुविधा है और लड़कों एवं लड़कियों के लिए अलग से शौचालय की व्यवस्था है । अधिकांश विद्यार्थियों के घर के आस-पास का वातावरण अच्छा नहीं है जिसके चलते उसका प्रभाव उनके परिवारों पर पड़ता है । घर के आस-पास के लोग शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते हैं । परिवार में यदि कोई नशा करके घर में आता है तो घर का माहौल बिगड़ जाता है और उनके परिवार में आये दिन लड़ाई व झगड़े होते हैं । इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षक जब मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण कार्य करते हैं तो वह कक्षा में अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं जबकि विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें शिक्षक द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पूर्णरूप से समझ में आती है ।

मुख्य शब्द: *अनुसूचित जाति/जनजाति, कोल जनजाति, आदिवासी, शैक्षिक स्थिति, अपव्यय एवं अवरोधन आदि ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना

कोल जनजाति को लेकर विभिन्न राज्यों के अनेक स्थानों जैसे कि क्षेत्रीय तथा राज्य स्तर पर खुलकर वाद-विवाद एवं तमाम बहसों को देखा जा सकता है । यह एक ऐसी जनजाति है जो कि वर्तमान सन्दर्भ में राजनीति का एक मुद्दा बनी हुई है । इसके अतिरिक्त हम यदि अनुसूचित जनजाति के विशेष सन्दर्भ की बात करें तो यह सहज रूप में ही अभिव्यक्त किया जा सकता है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में अनुसूचित जाति या जनजाति वह जातिगत श्रेणी है जो किसी भी परिचय की मोहताज नहीं है लेकिन वर्तमान में कोल जनजाति के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के स्तर में तमाम उतार चढ़ाव देखने को मिलता है जिसे शिक्षाशास्त्रियों के शब्दों में 'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' की समस्या कही जा सकती है । अत: इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किया जाता है तो निश्चित रूप से यह समाज एवं शैक्षिक जगत के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान कर सकेगा । अत: उक्त सन्दर्भ को देखते हुए सहज रूप में ही यह आवश्यकता महसूस होती है कि इन बच्चों को भी मुख्य धारा के बच्चों की शिक्षा से जोड़ा जाए, अपव्यय एवं अवरोधन की राष्ट्रव्यापी समस्या से उबरने का पुनः प्रयास किया जाये । अनुसूचित क्षेत्र के 'आदिवासी समाज' शिक्षित होने के बाद भी अपने अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ हैं । जनजातीय विकास तथा सुरक्षा के लिए भारत के संविधान में दर्जनों प्रावधानों के बावजूद इनका अपेक्षित लाभ इन्हें नहीं मिल रहा है । संविधान प्रदत्त अधिकारों की उपेक्षा लम्बे अरसे से की जा रही है लेकिन 'आदिवासी समाज' में जो शिक्षित वर्ग हैं और संविधान के प्रावधानों की जानकारी रखते हैं, उनमें इच्छाशक्ति का इतना अभाव है कि वे समय- समय पर संविधान की उपेक्षा के कारण उत्पन्न होने वाले अनुकूल परिणामों को महसूस करते हुए भी समस्याओं की दिशा में कोई पहल नहीं करते । यह हमारे समाज की विडंबना है कि 'जो जानते हैं, वे बोलते नहीं और जो बोलते हैं वो जानते नहीं' । आदिवासियों की दुर्दशा का शायद यही कारण हो सकता है । विद्यालयों में कोल जनजाति बच्चों की अवधारण की चुनौतियों का अध्ययन प्राप्त विभिन्न निष्कर्षों में से एक का प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णन किया गया है ।

कोल जनजाति

कोल जनजाति जातिगत रूप से आदिवासी है लेकिन वे अपने पारंपरिक जीवन के स्रोत से वंचित है । कोल जनजाति मुख्य रूप से प्रयागराज, बांदा, चित्रकूट, मिर्जापुर, सोनभद्र, सतना और रीवा जिलों के अलावा उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के किनारे बसे पिछड़े क्षेत्रों वुंदेलखंड में पाये जाते हैं । कोल जनजाति मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के आस-पास के जिलों की निवासी रही है । इन दोनों प्रान्तों की इस जनजाति में आपस में बहुत एकता है उनके पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्ध हैं और वे एक ही परम्परा का हिस्सा है । मध्य प्रदेश में उत्तर प्रदेश की सीमा तक के क्षेत्रों को अनुसूचित क्षेत्र घोषित किया गया है और वहाँ के कोल आदिवासियों को जनजाति का दर्जा दिया गया है परन्तु उत्तर प्रदेश से जुड़े हुए भौगोलिक क्षेत्रों को अनुसूचित क्षेत्रों में शामिल नहीं किया गया है और उत्तर प्रदेश के कोलों को अनुसूचित जनजाति दर्जे से शामिल नहीं किया गया । उत्तर प्रदेश के जिले प्रयागराज के कोल जनजाति की आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति अत्यंत चिंतनीय है । समुदाय के अधिकांश सदस्य मजदूरी करके अपना जीवन-यापन करते हैं । जिसमें मुख्यतः पत्थर फोड़ना और रेत बालू साफ करना आदि काम आते हैं । यह समुदाय जिले के अलग-अलग हिस्सों में छोटे-छोटे समूह में रहते हैं । ये मुख्य कस्बे से दूर

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रहते हैं, जहाँ पर प्राय: आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता भी देखने को नहीं मिलती है । सरकारी प्राथमिक विद्यालय सामान्यत:1-2 किलोमीटर की दूरी पर उपलब्ध है परन्तु बहुत ही कम लोग विद्यालय जाते हैं । अधिकांश सदस्य अशिक्षित हैं और बहुत लोगों ने पाँचवीं कक्षा तक अध्ययन करने के बाद पढ़ाई छोड़ दी । नई पीढ़ी के लोग पढ़ाई के महत्त्व को स्वीकारते हैं परन्तु वो भी विद्यालय नहीं जाते हैं । यह निश्चित तौर पर कह पाना असंभव है कि उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति ही उनकी अशिक्षा का कारण है या अशिक्षा की वजह से सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति दयनीय है ।

कोल जनजाति की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक स्थिति

भारत में कोल जनजाति लोग अंधविश्वासों व मान्यताओं से घिरे पड़े हुए हैं । जनजाति लोग स्वयं की पहचान नहीं कर पा रहे हैं । कोल जनजाति के लोग दूसरे लोगों पर भरोसा जल्दी कर लेते हैं । जिसके कारण कोल जनजाति स्वयं पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षिक विकास आदि वर्तमान परिस्थिति के अनुसार नहीं बना पा रहे हैं । कोल जनजाति लोग जादू, टोना और भूत-प्रेत आदि के आधार पर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान करते हैं । उनका देवी-देवताओं में पूर्ण विश्वास होता है और देवी-देवताओं का सहारा लेते है । कोल जनजाति लोग घने जंगलों, पहाड़ों, खंडहरों में निवास करते हैं । इन लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है । कोल जनजाति लोग खेतों में मजदूरी करते हैं और जंगलों में भेंड़, बकरियाँ चराते हैं । इनका जीवन बहुत ही कठोर परिश्रम से व्यतीत होता है । ये ज्यादातर भूमिहीन और भरपेट भोजन जुटाने के लिए साहूकारों व ठेकेदारों के चंगुलों में फंसे हुए हैं । कोल जनजाति के पिछड़ेपन का सबसे प्रमुख कारण शिक्षा व अस्पतालों का अभाव है । कोल जनजाति को लेकर यदि हम उनकी राजनीतिक दशा के बारे में बात करें तो यह कहा जा सकता है कि इस जाति के लोगों एवं समुदाय का राजनीतिक जीवन मुख्य धारा के लोगों के राजनीतिक जीवन से अलग है । इस समुदाय के लोगों में चुनाव व मतदान इत्यादि के प्रति उदासी का भाव देखा जा सकता है । इतना ही नहीं, इस समुदाय के लोगों में नेतृत्व कर्ता का भी अभाव देखने को मिलता है । कुछ क्षेत्र विशेष में तो राजनीतिक चुनावों के समय इन्हें भोला-भाला एवं अनपढ़ समझ कर राजनीतिक कुशल नेताओं के द्वारा इनके मतदानों का क्रय-विक्रय खूब धड़ल्ले से भी किया जाता है । प्रायः इस क्षेत्र के समुदाय के किसी एक अप्रशिक्षित या अल्पशिक्षित मुखिया को चंद रूपये व वस्त्र आदि मामूली सुविधाएँ प्रदान कर राजनैतिक रूप से इनका शोषण किया जाता है । जो कि पूर्णतया अमानवीय एवं निंदनीय है ।

सामान्य जनसंख्या की तुलना में अगर देखें तो जनजाति बच्चों की विद्यालय तक पहुंच बहुत ही कम है और इन क्षेत्रों में स्कूली सुविधाएँ भी बहुत ही सीमित मात्रा में हैं, जिसका एक प्रमुख कारण के विद्यालयों की गुणवत्ता और अपर्याप्त सुलभता । सुविधाओं की गुणवत्ता के संदर्भ में ग्रामीण विद्यालय विशेषतया आदिवासी क्षेत्रों में बने विद्यालयों का प्रदर्शन-स्तर सोचनीय है । यदि इच्छा से नहीं तो भूल-चूक से ही ग्रामीण विद्यालय "सर्वसुलभ" विद्यालय की तरह सेवा करते हैं । मुख्यतः निम्न जाति और जनजाति के बालकों के लिए विद्यालयों की स्थिति तो और भी खराब है । इन क्षेत्रों में संरचनात्मक सुविधाओं की अपर्याप्तता के अतिरिक्त शिक्षकों की अपर्याप्तता भी एक गंभीर चुनौती के रूप में सामने आयी है । इस तरह अपर्याप्त शिक्षक संख्या और शिक्षण प्रक्रिया में बड़ा

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

छात्र-शिक्षक अनुपात जैसी समस्याएं के कारण भी जनजाति समुदाय को शिक्षा के क्षेत्र में गम्भीर मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, जो कि बेहद निराशाजनक है । दूर दराज के इलाके विशेषतः जनजातीय इलाकों में स्थित विद्यालयों की एक समान-सी विशेषता है, साल में अधिकतर समय और कभी-कभी तो वर्षों तक बंद रहने वाले और केवल कागजी अस्तित्व वाले विद्यालयों का भी व्यौरा है । (एनसीईआरटी, 2007)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और 1992 में किये गये परिवर्तनों के अंतर्गत देश में असमानताएँ दूर करने और सबको समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने की बात कही गई है । इस नीति के अंतर्गत अधिकांश राज्यों में अनुसूचित जनजातियों के छात्रों हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ट्यूशन फ़ीस समाप्त कर दी गई है । उन्हें पाठ्य-पुस्तकें, यूनिफार्म तथा स्कूल बैग आदि भी निःशुल्क दिए जाते हैं । ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभाशाली बच्चों के लिए माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत 43,000 छात्रवृत्ति में 13,000 छात्रवृत्ति अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों को उपलब्ध कराई गई है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों को विशेष रूप में प्रतिवर्ष 50 जूनियर रिसर्च फ़ेलोशिप, 25 छात्रवृत्तियाँ, 20 रिसर्च एसोसिएट्सशिप और 50 फ़ेलोशिप प्रदान करता है । राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान परिषद ने जनजातियों की बोलियों में 10 पाठ्य पुस्तकें तैयार की है और 15 जनजातीय बोलियों में अध्ययन सामग्री तैयार की जा रही है । (भालेराव&धारवाड़कर, 2015)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा (2005) ने पाया कि विशेष रूप से जनजाति से संबंधित बच्चों को सामाजिक मुद्दों जैसे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गरीबी, बाल श्रम, अशिक्षा और वर्ग असमानताओं के प्रति संवेदनशील बनाना होगा । शिक्षा प्रणाली उस समाज से अलगाव में कार्य नहीं करती है जिसका वह एक हिस्सा है । यह विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों के बीच तीव्र असमानताओं में परिलक्षित होता है, जिन्हें अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदायों के स्कूल नामांकन दर में देखा जाता है । गंभीर चिंता की बात यह है कि हाशिए पर पड़े समूहों, यानी अनुसूचित जाति एवं जनजाति, जो परंपरागत रूप से हैं, के बारे में रूढ़ियों की दृढ़ता है । स्कूली शिक्षा तक पहुँच नहीं है, कुछ शिक्षार्थियों को ऐतिहासिक रूप से सीखने के डर के रूप में देखा गया है, जाति और लिंग में हीनता और असमानता निहित है । इन जनजाति बच्चों को शिक्षकों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है, पाठ्यपुस्तक से संबंधित नहीं हो सकते हैं । पिछली सदी के दौरान देखी गई नई तकनीकी पसंदों और जीवित शैलियों के उद्भव ने पर्यावरणीय गिरावट और वंचितों के बीच भारी असंतुलन पैदा किया है । अधिकांश जनजातियाँ देश के पहाड़ी और वन क्षेत्रों में दूरदराज और दुर्गम बस्तियों में स्थित बिखरी और छोटी बस्तियों में रहती हैं । आदिवासी केंद्रित क्षेत्रों में अधिकांश बुनियादी सुविधाओं जैसे सड़क, परिवहन, संचार, बिजली, चिकित्सा सुविधाओं आदि का अभाव है । आदिवासियों के बीच साक्षरता दर कम है और आदिवासी बच्चों के निरंतर शिक्षा का एक बड़ा हिस्सा स्कूल प्रणाली के बाहर होना है ।

शोध-उद्देश्य

1. कोल जनजाति के छात्रों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना ।
2. कोल जनजाति के छात्रों के विद्यालय अपव्ययन (dropout) के कारणों का पता लगाना ।
3. कोल जनजाति के छात्रों के विद्यालय से दूर रहने के कारणों का पता लगाना ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4. कोल जनजाति के छात्रों की शैक्षिक समस्याओं का पता लगाना ।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध-अध्ययन में उत्तर प्रदेश-प्रयागराज (इलाहबाद) जिले के शंकरगढ़ ब्लाक में स्थित विद्यालयों में कक्षा प्रथम से कक्षा अष्टम में अध्ययनरत कोल जनजाति के समस्त छात्रों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध-अध्ययन में शोध की वर्णनात्मक प्रकृति के अनुरूप उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया जिसमें कुल 100 छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया ।

शोध-उपकरण

शैक्षिक स्थिति को ज्ञात करने के लिए शोधार्थी द्वारा स्व:निर्मित उपकरण प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया ।

कोल जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं की निम्नलिखित चुनौतियाँ उभरकर सामने आयीं ।

प्रश्न 01- आपके माता-पिता की आपकी शिक्षा के प्रति व्यक्तिगत सोच कैसी है, क्या उन्हें लगता है कि शिक्षा आपको रोजगार देने में मददगार है ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची के प्रथम प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "शिक्षा के प्रति उनके माता-पिता की व्यक्तिगत सोच कैसी है" तो इस सम्बन्ध में 78% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके माता-पिता उन्हें शिक्षा नहीं देना चाहते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि शिक्षा से उन्हें कोई लाभ नहीं है जबकि 12% विद्यार्थियों ने कहा कि हमारी शिक्षा के प्रति हमारे माता-पिता की सोच सकारात्मक है वो हमें शिक्षा देना चाहते हैं जबकि 10% विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का जवाब नहीं दिया । शिक्षा के द्वारा रोजगार मिलने के सम्बन्ध में 26% विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षा से कोई भी रोजगार नहीं मिलता है जबकि 60% विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षा से रोजगार प्राप्त हो सकता है । हमने अपने गाँव में देखा कि बहुत सारे लोग नौकरी करते हैं । जबकि 5% विद्यार्थियों ने इस सम्बन्ध में कोई भी जवाब नहीं दिया । वर्तमान शिक्षा पद्धति में शिक्षण एवं पाठ्यक्रम का प्रारूप कुछ इस प्रकार से निर्धारित किया गया है कि आप जनमानस के लिए प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य ही स्पष्ट नहीं हो पाते हैं । प्रचलित शिक्षा जन-मानस के दैनिक-जीवन में अनुपयोगी प्रतीत होती है ।

प्रश्न 02- क्या आपके माता-पिता आपको रोज विद्यालय भेजते हैं ? यदि नहीं तो विद्यालय न जाने के क्या कारण हैं ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची के द्वितीय प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "उनके माता-पिता रोज विद्यालय नहीं भेजते हैं" क्योंकि उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है । इस सम्बन्ध में 70% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है जिसके कारण वह विद्यालय जाने में असमर्थ थे जबकि 24% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति ठीक है । वे अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित भी करते हैं जबकि 6% विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं दिया । विद्यालय न जाने के कारण के सम्बन्ध में

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

66% विद्यार्थियों ने कहा कि विद्यालय घर से अधिक दूरी पर होने के होने कारण रोज विद्यालय नहीं जाते हैं जबकि 20% विद्यार्थियों ने कहा कि विद्यालय जाना पसंद नहीं है और उनका पढ़ाई में मन नहीं लगता है । अत: अधिकतर विद्यार्थी विद्यालय छोड़ने का कारण तथा विद्यालय जाने का कोई साधन न होना तथा घर से विद्यालय का दूर होना मानते हैं । उन विद्यार्थियों के आस-पास कोई विद्यालय नहीं था और विद्यालय घर से बहुत दूर था जिसके कारण उन्हें रास्ते में आने-जाने में डर का सामना करना पड़ता था ।

प्रश्न 03- आपके जनजाति के लोग शिक्षा के प्रति कैसी राय रखते हैं ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची के तृतीय प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "आपके जनजाति के लोग शिक्षा के प्रति कैसी राय रखते हैं" जनजाति के लोगों को शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच थी क्योंकि उनको लगता था कि उनके बच्चे पढ़-लिख कर भी एक अच्छी नौकरी नहीं कर सकते । जनजाति के लोग अधिकांश अशिक्षित थे जिसके कारण शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते थे । जनजाति के लोग बहुत ही गरीब परिवार से आते हैं । जनजाति के लोग दिन भर की मजदूरी से अपने बच्चों को पेट भरते हैं । उनके बच्चे भी उनके साथ कार्यों में लगे रहते हैं इसलिए वे शिक्षा को ज्यादा महत्त्व नहीं दे पाते हैं ।

प्रश्न 04- विद्यालय में कक्षा शिक्षण के दौरान आपको किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची के चतुर्थ प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "विद्यालय में कक्षा शिक्षण के दौरान आपको किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है" के सम्बन्ध में 70% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके विद्यालय में शिक्षण सहायक-सामग्री का अभाव है जबकि 25% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके विद्यालय में पर्याप्त शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध है जबकि 5% विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया । जबकि 50% विद्यार्थियों ने कहा कि विद्यालय का अनुशासन बहुत कठोर तथा दण्डात्मक था जिसके कारण पढ़ाई छोड़ना उचित समझा जबकि 40% विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षक कक्षा में रुचिकर ढंग से पढ़ाते हैं जोकि उन्हें कक्षा में अच्छा लगता है जबकि 10% विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया । जबकि 65% विद्यार्थियों ने कहा कि कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाई गयी मातृभाषा समझ में नहीं आती है जबकि 30% विद्यार्थियों का कहना है कि शिक्षक द्वारा पढ़ाई गयी मातृभाषा अच्छे से समझ में आती है जबकि 5% विद्यार्थियों ने कोई उत्तर नहीं दिया । उन विद्यार्थियों का कहना था कि कक्षा में शिक्षक द्वारा पढाई जाने वाली शिक्षा समझ में अच्छे से नहीं आती है । शिक्षक द्वारा ब्लैकबोर्ड होने के बाद भी बोलकर पढ़ाना समझ से बाहर चला जाता है । कक्षा के दौरान शिक्षण सहायक-सामग्री का भी अभाव था जिसके कारण शिक्षण दौरान बाधा उत्पन्न होती है । अधिकतर विद्यार्थियों का कहना था कि विद्यालय का अनुशासन- दण्डात्मक था । उनको कक्षा में लड़ाई-झगड़ा करने पर तथा विद्यालय बिलम्ब से आने पर दण्ड दिया जाता है ।

प्रश्न 05- आपके अध्यापक पढ़ाते समय कौन-कौन सी शिक्षण-सहायक सामग्री का प्रयोग करते हैं ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची में पंचम प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "उनके अध्यापक कक्षा में पढ़ाते समय ब्लैकबोर्ड के रूप में शिक्षण-सहायक सामग्री का प्रयोग करते हैं" इस सम्बन्ध में 60% विद्यार्थियों ने कहा कि

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कक्षा में अध्यापक शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग नहीं करते हैं । उनका कहना है कि उनके अध्यापक कक्षा में कुर्सी पर बैठ कर शिक्षा देते हैं जबकि 40% विद्यार्थियों ने कहा कि अध्यापक कक्षा में पढ़ाते समय ब्लैकबोर्ड का प्रयोग करते हैं । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि शिक्षक द्वारा कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाते समय शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग थोड़ा बहुत ही करते है जबकि कुछ विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें कक्षा में ब्लैकबोर्ड के माध्यम से शिक्षक पढ़ाते हैं ।

प्रश्न 06- क्या आपको कभी-कभी विद्यालय में शिक्षकों द्वारा दण्ड दिया जाता है, यदि हाँ तो क्या कारण हैं ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची में षष्ठम प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "उनके विद्यालय में कभी-कभी शिक्षकों द्वारा दण्ड दिया जाता है" इस सम्बन्ध 50% विद्यार्थियों ने कहा कि विद्यालय का अनुशासन दण्डात्मक था । कक्षा में देरी से आने पर डाँटते-मारते थे जबकि 40% विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षक कक्षा में रुचिकर ढंग से पढ़ाते हैं जो कि उन्हें कक्षा में अच्छा लगता है जबकि 10% विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि विद्यालय का अनुशासन बहुत कठोर है । विद्यालय में देरी से पहुँचने पर शिक्षक द्वारा उन्हें दंडित किया जाता है ।

प्रश्न 07- क्या आपके विद्यालय में पीने का पानी तथा शौचालय की उचित सुविधा है, यदि नहीं तो शौचालय का प्रयोग करने हेतु आप कहाँ जाते हैं ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची में सप्तम प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "उनके विद्यालय में पीने का पानी तथा शौचालय की उचित सुविधा है"-इस सम्बन्ध में 40% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके विद्यालय में न पीने की सुविधा है और न ही शौचालय जाने की सुविधा है । उनको शौचालय के लिए बाहर जाना पड़ता है जबकि 50% विद्यार्थियों ने कहा कि उनके विद्यालय में पीने के लिए हैण्डपम्प व वाटरकूलर की सुविधा उपलब्ध है जबकि 10% विद्यार्थियों ने कोई उत्तर नहीं दिया । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि उनके विद्यालय में पानी पीने के लिए हैण्डपम्प तथा वाटरकूलर की सुविधा है और लड़कों एवं लडकियों के लिए अलग से शौचालय की व्यवस्था है । कुछ विद्यार्थियों का कहना था कि उनको शौचालय के लिए बाहर जाना पड़ता है ।

प्रश्न 08- क्या आपको विद्यालय जाने के लिए सदैव उत्सुकता रहती है, यदि नहीं तो क्या कारण है ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची में अष्टम प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "विद्यालय जाने के लिए सदैव उत्सुकता रहती है" इस सम्बन्ध में 60% विद्यार्थियों का कहना था कि उनको विद्यालय में कोई खास रूचि नहीं थी, उनको विद्यालय जाना पसंद नहीं था जबकि 30% विद्यार्थियों ने कहा कि उनको विद्यालय के लिए उत्सुकता रहती थी और उनकी शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच है, जबकि 10% विद्यार्थियों ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि उनको विद्यालय जाने में कोई रूचि नहीं थी क्योंकि उनको विद्यालय जाना अच्छा नहीं लगता था । उन विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन बिल्कुल भी नहीं लगता था जबकि कुछ विद्यार्थी विद्यालय जाने के लिए तैयार रहते हैं, उनको शिक्षा से लगाव है ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रश्न 09- आपके घर का वातावरण कैसा है, क्या आपके परिजन शराब, नशा इत्यादि का सेवन करते हैं ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची में नौवें प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि " उनके घर का वातावरण कैसा है, क्या आपके परिजन शराब, नशा इत्यादि का सेवन करते हैं" इस सम्बन्ध में 60% विद्यार्थियों के अनुसार घर में जब कोई परिजन नशा इत्यादि करके आता है तो घर में झगड़े जैसा माहौल हो जाता है, इन्हीं में से कुछ विद्यार्थियों के अनुसार ये झगड़ालू माहौल उन्हें प्रभावित करता है जबकि 40% विद्यार्थियों का कहना है कि उनके किसी परिजन में नशे की आदत नहीं है सब लोग मिल-जुल कर रहना पसंद करते हैं । अधिकांश विद्यार्थियों के घर के आस-पास का वातावरण अच्छा नहीं होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न होती है जिसके चलते उसका प्रभाव उनके परिवारों पर भी पड़ता है। घर के आस-पास के लोग शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते हैं। परिवार में कोई नशा करके घर में आता है तो घर का माहौल बिगड़ जाता है और उनके परिवार में आये दिन लड़ाई व झगड़े होते हैं।

प्रश्न 10- क्या शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा आपको पूर्ण रूप से समझ में आती है ?

उत्तर- साक्षात्कार अनुसूची में दसवें प्रश्न में विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि "शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा आपको पूर्ण रूप से समझ में आती है" इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षक जब मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण कार्य करते हैं तो वह कक्षा में अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं जबकि अधिकतर विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें शिक्षक द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पूर्णरूप से समझ में आती है। कुछ विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें शिक्षक द्वारा पढाई जाने वाली भाषा समझ में नहीं आती है ।

निष्कर्ष

वर्तमान शिक्षा पद्धति में शिक्षण एवं पाठ्यक्रम का प्रारूप कुछ इस प्रकार से निर्धारित किया गया है कि आप जन-मानस के लिए प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य ही स्पष्ट नहीं हो पाते हैं । प्रचलित शिक्षा जनमानस के दैनिक-जीवन में अनुपयोगी प्रतीत होती है । अधिकतर विद्यार्थी शैक्षिक समस्याओं का कारण विद्यालय जाने का कोई साधन न होना तथा घर से विद्यालय का दूर होना मानते हैं । उन विद्यार्थियों के आसपास कोई विद्यालय नहीं है और विद्यालय यदि है भी तो घर से बहुत दूर है जिसके कारण उन्हें रास्ते में आने-जाने में डर का सामना करना पड़ता है । उनके घर से विद्यालय जाने के लिए पहाड़ों और जंगलो से गुजरना पड़ता है जिसके कारण विद्यालय में उन्हें कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है । कोल जनजाति के लोगों को शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच थी क्योंकि उनको लगता था कि उनके बच्चे पढ़-लिख कर भी एक अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकते । कोल जनजाति के अधिकांश लोग अशिक्षित थे जिसके कारण शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते थे । कोल जनजाति के लोग बहुत ही गरीब परिवार से सम्बन्धित हैं । कोल जनजाति के लोग दिन भर की मजदूरी से अपने बच्चों का पेट भरते हैं । उनके बच्चे भी उनके साथ उनके कार्यों में लगे रहते हैं । उन विद्यार्थियों का कहना था कि कक्षा में शिक्षक द्वारा पढाई जाने वाली शिक्षा अच्छे से समझ में नहीं आती है । शिक्षक द्वारा ब्लैकबोर्ड होने के बाद भी बोलकर पढ़ाना समझ से बाहर चला जाता है । कक्षा के दौरान सहायक-सामग्री का भी अभाव है जिसके कारण शिक्षण के दौरान बाधा उत्पन्न होती है । अधिकतर विद्यार्थियों का कहना था कि विद्यालय का अनुशासन दण्डात्मक है । उनको

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कक्षा में लड़ाई-झगड़ा करने तथा विद्यालय बिलम्ब से आने पर दण्ड दिया जाता है । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि शिक्षक द्वारा कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाते समय शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग थोड़ा बहुत ही करते थे, जबकि कुछ विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें कक्षा में सिर्फ ब्लैकबोर्ड के माध्यम से शिक्षक कक्षा में पढ़ाते हैं । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि विद्यालय का अनुशासन बहुत कठोर था । विद्यालय में देरी से पहुँचने पर शिक्षक द्वारा उन्हें दंडित किया जाता है । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि उनके विद्यालय में पानी पीने के लिए हैण्डपम्प तथा वाटरकूलर की सुविधा है और लड़कों एवं लड़कियों के लिए अलग से शौचालय की व्यवस्था है । कुछ विद्यार्थियों का कहना था कि उनको शौचालय के लिए बाहर जाना पड़ता है । अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि उनको विद्यालय जाने में कोई रूचि नहीं है क्योंकि उनको विद्यालय जाना अच्छा नहीं लगता है । उन विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन बिल्कुल भी नहीं लगता है जबकि कुछ विद्यार्थी विद्यालय जाने के लिए तैयार रहते हैं । उनको शिक्षा से लगाव है । अधिकांश विद्यार्थियों के घर के आस-पास का वातावरण अच्छा नहीं है जिसके चलते उसका प्रभाव उनके परिवारों पर पड़ता है । घर के आस-पास के लोग शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते हैं । परिवार में यदि कोई नशा करके घर में आता है तो घर का माहौल बिगड़ जाता है और उनके परिवार में आये दिन लड़ाई व झगड़े होते है । इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षक जब मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण कार्य करते हैं तो वह कक्षा में अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं जबकि विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें शिक्षक द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा पूर्णरूप से समझ में आती है । कुछ विद्यार्थियों का कहना था कि उन्हें शिक्षक द्वारा पढाई जाने वाली भाषा समझ में नहीं आती है ।

शैक्षिक निहितार्थ

शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित बिंदु प्राप्त हुए जिसके माध्यम से कोल/आदिवासी की शिक्षा व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है ।

1. कोल जनजाति के विद्यार्थियों में विद्यालय असुलभता से होने वाली समस्याओं को दूर कर अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या को खत्म किया जा सकता है ।
2. हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषा के साथ जनजाति समुदाय की भाषा का ध्यान रखा जाना चाहिए ।
3. विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करके उन्हें विद्यालय से जोड़े रखा जा सकता है ।
4. शिक्षा सम्बन्धी नीति बनाते समय प्रस्तुत शोध-अध्ययन से यह लाभ होगा कि शिक्षण विधि एवं पाठ्यक्रम का निर्धारण आदिवासी की आवश्यकता अनुरूप किया जा सके ।
5. विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के निर्माण में सिर्फ हिन्दू या मुस्लिम संस्कृति ही नहीं बल्कि कोल/आदिवासी संस्कृति का भी ध्यान रखा जाना चाहिए जिससे कोल/आदिवासी समाज के बच्चों को भी विद्यालय उनके समाज के एक अंग के रूप में प्रतीत हो ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ ग्रन्थ

भालेराव, एस०पी० & धारवाडकर, डी०एस० (2015). भारतीय जनजातियाँ, इशिका पब्लिशिंग हाउस जयपुर, राजस्थान.

एन.सी०एफ० (2005). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,17- बी, अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016.

एन.सी०ई०आर०टी० (2007). राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र,अनुसूचित जाति और जनजाति के बच्चों की समस्याएं, नई दिल्ली.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies